"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 08, Issue: 02, Mar. – Apr. 2021 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

"हिंदी साहित्य में नारी का योगदान"

सुदेशना महादेव हिरवे

एम.ए., बी.एड. (हिंदी)

बीड, महाराष्ट्र, भारत

हिंदी साहित्य में महिलाओं ने भी अपनी अमूल्य क्रांतियो सें हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है |

हिंदी साहित्य के विश्व में समर्थ कथाकार के रूप में महिला लेखन की एक समृद्ध और सशक्त परंपरा हिंदी साहित्य में रही है आधुनिक काल में महिला लेखन के साथ महिलाओं ने | | साहित्यिक क्षेत्र में अनमोल योगदान दिया हैं

नारी का जीवन बहुत हि संघर्ष सें विरत है, महिला साहित्यकार के लिए सबसे पहले बाहरी संदर्भो में उसका आंतरिक समय होता है जहां वो जिति हैं और साँस लेती हैं और वहीं दूसरी और होती हैं समय की चुनौतियां जिससे वो बिलकुल परे होती हैं । उनकि राह आसान नहीं है उनकी राह में बहुत सी विचारधाराएँ में दुविधाए हैं | अगर नारी के योगदान का मुल्यंकण साहित्य में करना हो तो वह किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं |

आज कें दौर में महिलाओं ने पुरुष के मुकाबले साझेदारी निभाई हैं । महिलाओं के अंदर बढ़ती चेतना और जागरूकता ने पारंपरिक छबि को तोडा हैं ।

1) मन्नु भंडारी की कहानियों में स्त्री जीवन :

हिंदी साहित्य में भारतीय स्त्रियों के आदर्श और मुल्यबोध का वर्णन हमारे साहित्य में भरा है | भारत आजादी के बाद स्त्री शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन कें कारण नारी कों अपने व्यक्तित्व की अलग पहचान होने लगी है । सामाजिक मूल्यों कें साथ उसमें व्यक्तिमूल्यों और अपना आस्तित्व बोध उभरने लगा है । आज़ स्त्री आर्थिक दृष्टी सें होने का साहस बटोरने लगी हैं । आज स्त्री आर्थिक रूप सें

स्वतंत्र या स्वावलंबी सी प्रौढ़ा के लिए ही नही अपितू अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा करनेवाली किसी भी स्त्री कें लिये विकट सिद्ध हो सकती है ।

2) हिंदी सहित्य में महिला लेखन कवयित्री महादेवी वर्मा :

महादेवी वर्मा जी रहस्यवादी कवयित्री होने के नाते के मूल भावों कों समझने में अधिक सफल हुईं हैं । महादेवी वर्मा जी वेदना की गहनता कें स्तर पर कवयित्री मीरा के बाद सबसे बडी महिला कवयित्री के रूप में सामने आती हैं ।

महादेवी वर्मा जी के काव्य में वेदना की ऐसी धारा सर्वत्र प्रवहमान है । जो कि पाठकों और आलोचकों के लिए एक सहज विषय बना हुआ है । इनकी कविता में करूणा और वेदना का साम्राज्य हैं । उनके काव्य का सर्वं प्रमुख तत्ववेदना का आंनद वेदना का सौंदर्य वेदना के लिए ही आत्मवेदना का स्पष्ट चित्रण किया है ।

3) कृष्ण भक्त मीराबाई :

कृष्णभक्त कवियों में मीराबाई का नाम सर्वोच्च स्थान पर हैं । अत्यंत प्रसिद्ध भक्तीमयी नारी मीराबाई अप्रतिम रचनाकार है | मीराबाई अपने समय की सशक्त निर्भिक भक्त नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं । समाज विज्ञान की भी मर्मज्ञं नही थी। मीराबाई शुद्ध सरल पवित्र भावनाओं का भंडार थीं । काव्य कें शेत्र में उनका काव्य अप्रराजय था । उन्हें गिति-काव्य कें सुप्रसिद्ध कवयित्री कहना न्याय संगत हैं । गिति-काव्य में मीराबाई आज़ भी अप्रतिम है । मीराबाई के पदों की भाषा सरल हैं । उनकी भाषा में राजस्थानी मिश्रित ब्रज् भाषा का प्रयोग मिलता हैं । कहीं - कहीं गुजराती के शब्द भी आ गए हैं ।

मीराबाई की भक्ति -

माधुर्य भाव की कृष्ण भक्ति हैं । भिन्न-भिन्न रागिनियों में गाए जाने वाली भक्तिपूर्ण 'पदावली' मीराबाई की प्रामाणिक रचना है । हिंदी साहित्य में मीराबाई का स्थान भक्त कवयित्री में विशेष रूप सें लिया जाता हैं ।

4) प्रभा खेतान स्त्रीवादी चिंतक :

प्रसिद्ध साहित्यकार प्रभा खेतान स्त्रीवादी चिंतक कें रूप में पहचानी जाती है | प्रभा खेतान अपने लेखन और व्यक्तिगत जीवन में आगे थी, स्त्री की नियतियो को उन्होंने सीखा नहीं था । प्रभा खेतान का मत था कि आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करके स्त्री आरोपित भूमिकाओं सें मुक्त होनेपर असल संघर्ष कर सकती हैं । भारतीय नारी की दशा एवं दिशा का चित्रण भी प्रभा खेतान की आत्म कथाओं में मिलता हैं ।

प्रभा खेतान ने समकालीन कथा -

साहित्य में अपनी पहचान कथा - लेखन तथा स्त्री विमर्श कें शेत्र में बनाई हैं । प्रभा खेतान ने भूमंडलीकरण को उसके प्रतेक पहलू पर गंभीरता से विचार किया हैं । श्रमिक स्त्री की स्थिती उन्हें उपभोग्तावादी संस्क्रती के दौर में कमजोर होती दिखाई देता है । विविध धर्मी रचनात्मक एवं चिंतन परक लेखन के साथ अपने स्त्रीवादी विचारों कीं दृष्टी से भी प्रभा खेतान हिंदी लेखन में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं |

5) मेहरूनिसा परवेज़ की नारी कहानियाँ :

हिंदी साहित्य में नारी लेखिकाओ में मेहरूनिसा परवेज़ एक बहुचर्चित नाम हैं । उन्होंने नारी के मध्यमवर्गीय दर्द को जिस संजीदगी कें साथ पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है | आज हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श चर्चा का विषय बना हुआ है | स्त्री विमर्श एक और नारा है तो दुसरी और गंभीर चिंतन का विषय हैं ।

आज नारी अपने अस्तित्व की सुरक्षा कें लिए परंपरागत मूल्य सें लड रही है| मेहरूनिसा परवेज़ ने समसामाजिक नारी के चिंतन और व्यवहार में आए परिवर्तन कें रेखांकित करणे कें साथ नारी को नारी कें रूप में समाज में स्थापित कराणा चाहती हैं | हिंदी की महिला उपन्यासकारो में मेहरूनिसा परवेज़ का स्थान विशिष्ट है | महिला राचनाकारो में अभिव्यक्त करते हुए साहित्य कें माध्यम सें बताया हैं की जिसमें वर्तमान महिला सशक्तीकरण वर्ष की प्रासंगिकता बनती हैं ।